मधुबन ओम् शान्ति अंक 320 मार्च 2019

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(05-02-19)

परमप्यारे शिव भोलानाथ बाप के अति प्रिय, सदा परमात्म स्नेह में समाये हुए, अपनी श्रेष्ठ चलन और खुशनुमा चेहरे द्वारा विश्व के कोने-कोने में परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनी हुई निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ, हम सबके अति प्रिय, सर्व के गति सद्गतिदाता शिव भोलानाथ बाप के दिव्य जन्म दिन की सबको बहुत-बहुत मुबारक हो।

बाद समाचार जनवरी के वरदानी अव्यक्त मास में सभी ने साकार ब्रह्मा बाप के समान स्वयं को सम्पन्न सम्पूर्ण बनाने तथा 50 वर्ष की अव्यक्त पालना का रिटर्न देने निमित्त बहुत अच्छे-अच्छे संकल्प लिये तथा उमंग-उत्साह से तपस्या की। अभी फिर महाशिवरात्रि का पावन पर्व समीप आ रहा है। इस पर्व को विशेष भारत में सभी सेवाकेन्द्रों पर खूब धूमधाम से मनाते, बेहद की सेवायें करते हैं। सब तरफ शिवबाबा का ध्वज फहराते, प्रभातफेरी निकालते, प्रदर्शनियां करते, यह सर्वश्रेष्ठ हीरे तुल्य जयन्ती, सो गीता जयन्ती, सो हम बच्चों की जयन्ती इस बार भी खूब उमंग-उत्साह से मनानी है। 83 वीं शिवजयन्ती के निमित्त सभी डायरेक्शन अलग से आ रहे हैं।

मीठे बाबा ने तो हम बच्चों को कितना खुशनसीब बनाया है, हमारे संस्कार ही सदैव खुशी में झूमने के बन गये हैं। जितना हमारा दैवी परिवार वृद्धि होता जाता, उतना खुशी भी बढ़ती जाती है। विश्व परिवर्तन के कार्य में जैसे साइंस की शक्ति मदद कर रही है, ऐसे साइलेन्स की शक्ति भी विशेष स्व परिवर्तन और विश्व परिवर्तन के लिए बहुत जरूरी है। प्यारे बापदादा भी वतन से नई सृष्टि की स्थापना का कार्य बहुत फास्ट गति से करवा रहे हैं। बाबा का नाम लेते ही सब काम सहज हो जाते हैं। इस संगमयुग का भी बहुत बड़ा महत्व है। जो बीता सो अच्छा, जो होगा सो अच्छा, जो हो रहा है सब अच्छे से अच्छा है। हम सबमें खुश हैं, राज़ी हैं। हर बात में कुछ नया रहस्य भरा हुआ है इसलिए ड्रामा की हर सीन बड़ी अच्छी लगती है। सिर्फ हर बात में अटेन्शन है, किसी भी बात का टेन्शन नहीं है। न कोई चिंतन है, न चिंता व फिकर है। बाकी एक ही संकल्प रहता है कि बाबा जो कहता है वही हमें करना है। सबको यह पता होना चाहिए कि इस जहान में मेरा क्या पार्ट है? मैं कौन हूँ, किसकी हूँ और मुझे क्या करना है! बाबा मेरा, मैं बाबा की... कराने वाला बाबा करा रहा है इससे सदा ही शान्ति, खुशी, प्रेम, आनंद में रहना सहज है।

ड्रामा में जो नूँधा हुआ है वही एक्यूरेट है इसलिए हम यह नहीं कह सकते मैं जो चाहूँ सो करूँ। बाबा कहता है नहीं, तुम चाहना वा कामना नहीं रखो, भावना भले रखो। भावना से सुख इतना मिलता है जो उड़नखटोले में उड़ जाते हैं। अभी हमें यहाँ नहीं रहना है क्योंकि यह देश हमारा नहीं है, हम यहाँ के रहने वाले नहीं हैं। बाबा के प्यार की डोर हमको यहाँ रहने नहीं देती है, वो खींचती रहती है। कई पूछते हैं क्या पुरुषार्थ करूँ? बाबा कहते बच्चे सदा आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार बनकर रहो। अलबेलेपन में टाइम नहीं गंवाओ। जहाँ भी बाबा बिठाये, सिर्फ शान्ति मेरे गले का हार हो। पवित्रता और सत्यता जीवन में एक्यूरेट हो। उतावली नेचर न हो। धीरज से काम लो। सदा बाबा को साथी बनाकर उनके साथ रहना है। बाबा जो कराये वो दिल जान से करना है। बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख सदा ऊंची स्थिति का अनुभव करते उड़ती कला में उड़ रहे हो ना। अच्छा !

सभी को बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"अखण्ड महादानी बनो"

1) महादानी अर्थात् मिले हुए खज़ाने बिना स्वार्थ के सर्व आत्माओं प्रति देने वाले - नि:स्वार्थी। स्व के स्वार्थ से परे आत्मा ही महादानी बन सकती है। दूसरों की खुशी में स्वयं खुशी का अनुभव करना भी महादानी बनना है।

2) जैसे सागर सम्पन्न है, अखुट है, अखण्ड है, ऐसे आप बच्चे भी मास्टर, अखण्ड, अखुट खज़ानों के मालिक हो। तो जो खज़ाने मिले हैं उन्हें महादानी बन औरों के प्रति कार्य में लगाते रहो। जो भी सम्बन्ध में आने वाली भक्त वा साधारण आत्मायें हैं उनके प्रति सदा यही लगन रहे कि इन्हें भक्ति का फल मिल जाए। जितना रहमदिल बनेंगे उतना ऐसी भटकती हुई आत्माओं को सहज रास्ता बतायेंगे।

3) आपके पास सबसे बड़े से बड़ा खजाना खुशी का है, आप इस खुशी के खज़ाने का दान करते रहो। जिसको खुशी देंगे वह बार-बार आपको धन्यवाद देगा। दु:खी आत्माओं को खुशी का दान दे दिया तो आपके गुण गायेंगे। इसमें महादानी बनो, खुशी का खज़ाना बांटो। अपने हमजिन्स को जगाओ। रास्ता दिखाओ।

4) अब समय प्रमाण अपनी हर कर्मेन्द्रिय द्वारा महादानी वा वरदानी बनो। मस्तक द्वारा सर्व को स्व-स्वरुप की स्मृति दिलाओ। नयनों द्वारा स्व-देश और स्वराज्य का रास्ता दिखाओ। मुख द्वारा रचयिता और रचना के विस्तार को स्पष्ट कर ब्राह्मण सो देवता बनने का वरदान दो। हस्तों द्वारा सदा सहज योगी, कर्मयोगी बनने का वरदान दो। चरण कमल द्वारा हर कदम फालो फादर कर हर कदम में पदमों की कमाई जमा करने के वरदानी बनो, ऐसे हर कर्मेन्द्रिय से महादान, वरदान देते चलो।

5) मास्टर दाता बन परिस्थितियों को परिवर्तन करने का, कमजोर को शक्तिशाली बनाने का, वायुमण्डल वा वृत्ति को अपनी शक्तियों द्वारा परिवर्तन करने का, सदा स्वयं को कल्याण अर्थ जिम्मेवार आत्मा समझ हर बात में सहयोग वा शक्ति के महादान वा वरदान देने का संकल्प करो। मुझे देना है, मुझे करना है, मुझे बदलना है, मुझे निर्माण बनना है। ऐसे ''ओटे सो अर्जुन'' अर्थात् दातापन की विशेषता धारण करो।

6) अब हरेक आत्मा प्रति विशेष अनुभवी मूर्त बन, विशेष अनुभवों की खान बन, अनुभवी मूर्त बनाने का महादान करो। जिससे हर आत्मा अनुभव के आधार पर अंगद समान बन जाए। चल रहे हैं, कर रहे हैं, सुन रहे हैं, सुना रहे हैं, नहीं। लेकिन अनुभवों का खजाना पा लिया – ऐसे गीत गाते खुशी के झूले में झूलते रहें।

7) आप बच्चों को जो भी खजाने बाप द्वारा मिले हैं, उन्हें बाँटते रहो अर्थात् महादानी बनो। सदैव कोई भी आवे तो आपके भण्डारे से खाली न जाए। आप सब बहुकाल के साथी हो और बहुकाल के राज्य अधिकारी हो। तो अन्त की कमजोर आत्माओं को महादानी, वरदानी बन अनुभव का दान और पुण्य करो। यह पुण्य आधाकल्प के लिए आपको पूजनीय और गायन योग्य बना देगा।

8) आप सब ज्ञान के खज़ाने से सम्पन्न धन की देवियाँ हो। जब से ब्राह्मण बने हो तब से जन्म-सिद्ध अधिकार में ज्ञान का, शक्तियों का खज़ाना मिला है। इस खजाने को स्व के प्रति और औरों के प्रति यूज़ करो तो खुशी बढ़ेगी, इसमें महादानी बनो। महादानी अर्थात् सदा अखण्ड लंगर (भण्डारा) चलता रहे।

9) ईश्वरीय सेवा का बड़े-से-बड़ा पुण्य है – पवित्रता का दान देना। पवित्र बनना और बनाना ही पुण्य आत्मा बनना है क्योंकि किसी आत्मा को आत्म-घात महा पाप से छुड़ाते हो। अपवित्रता आत्म-घात है। पवित्रता जीय-दान है। पवित्र बनो और बनाओ - यही महादान कर पुण्य आत्मा बनो।

10) महादानी अर्थात् बिल्कुल निर्बल, दिलशिकस्त असमर्थ आत्मा को एकस्ट्रा बल दे करके रूहानी रहमदिल बनना। महादानी अर्थात् बिल्कुल होपलेस केस में होप (Hope) पैदा करना। तो मास्टर रचयिता बन प्राप्त हुई शक्तियों व प्राप्त हुए ज्ञान, गुण, व सर्व खज़ाने औरों के प्रति महादानी बनकर देते चलो।

11) दान सदा बिल्कुल ग़रीब को दिया जाता है। बेसहारे को सहारा दिया जाता है। तो प्रजा के प्रति महादानी व अन्त में भक्त आत्माओं के प्रति महादानी बनो। आपस में एक दूसरे के प्रति ब्राह्मण महादानी नहीं। वह तो आपस में सहयोगी साथी हो। भाई-भाई हो व हमशरीक पुरूषार्थी हो। उन्हें सहयोग दो।

12) साक्षात बाप-समान बनकर चारों ओर की तड़पती हुई आत्माओं को लाइट हाउस, माइट हाउस बनकर रास्ता बताते चलो। लक्ष्य रखो कि हर आत्मा को कुछ-न-कुछ देना जरूर है। चाहे मुक्ति चाहे जीवनमुक्ति। कोई मुक्ति वाले हैं तो उनको भी बाप का परिचय देकर मुक्ति का वरदान दो।

13) अपने-अपने स्थान की सेवा तो करते हो लेकिन अभी बेहद के विश्व-कल्याणकारी बनो। एक स्थान पर रहते भी मन्सा शक्ति द्वारा वायुमण्डल और वायब्रेशन द्वारा विश्व-सेवा में सहयोगी बनो। ऐसी पॉवरफुल वृत्ति बनाओ जिससे वायुमण्डल बने।

14) आगे चलकर आप मास्टर सर्वशक्तिमान् के पास सब भिखारी बनकर आयेंगे। पैसे या अनाज के भिखारी नहीं लेकिन शक्तियों के भिखारी आयेंगे। इसके लिए पहले से अपने पास सब स्टॉक जमा करो क्योंकि दान वही दे सकता जिसके पास अपने से ज्यादा हो। अगर अपने जितना ही होगा तो दान क्या करेंगे? इसलिए जमा करो और भरपूर बनो।

15) गायन है भाग्य विधाता बाप ने बह्मा द्वारा भाग्य बांटा, तो जो ब्रह्मा का काम, वह ब्राह्मणों का काम। वे लोग कपड़ा बांटेंगे, अनाज बाटेंगे, पानी बाटेंगे लेकिन श्रेष्ठ भाग्य तो भाग्य विधाता के बच्चे ही बाँट सकते। तो आप सब श्रेष्ठ भाग्य का दान करने वाले श्रेष्ठ महादानी, श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मायें हो। इस भाग्य बांटने में फ्राकदिल बनो। यह अखुट है।

16) आप महादानी बच्चे सदा देते रहो, एक दिन भी दान देने के सिवाए न हो। सदा के दानी सारा समय अपना खजाना खुला रखते हैं। जिसके पास खजाना होता है वह कहीं से भी गरीबों को ढूँढकर भी ढिंढोरा पिटवाकर भी दान जरूर करते हैं क्योंकि उन्हें मालूम है दान करने का पुण्य मिलता है। तो आप अविनाशी खज़ानों के महादानी बनो, सेवा को बढ़ाओ, रेस करो। कोई भी आत्मा वंचित न रह जाए।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 29-12-14 *मधुबन*

"सारी लाइफ में सेवा की सफलता का आधार भावना, विश्वास और सच्चाई है" (दादी जानकी)

सच्चाई, सफाई, सादगी यह तीन शब्द सारी लाइफ में बहुत कीमती हैं। कोई सैलवेशन नहीं, आधार नहीं। बाबा कहता है सतयुग में महल मिलेगा, उसके पहले अभी यह संग बहुत अच्छा मिला है। बाबा ने कहा तुमको तो मूर्ति होके रहना है। एक बाबा दूसरा न कोई, वन्डरफुल। अभी जैसे शाम को सब मिल करके योग करते हैं, वैसे रात को भी पौने दस बजे 10 मिनट योग करके बाबा से गुडनाइट करके फिर सोना। एक घड़ी क्या, कोई भी घड़ी कुछ भी ख्याल नहीं करो। जैसे बाबा ने कहा अभी सभी ऐसे योग करो जैसे इस हॉल में कोई नहीं है। ऐसे शान्ति में रहने से एनर्जी बनती है। मुझ आत्मा को जो रूहानी शक्ति बाबा दे रहा है वो सबको मिले, यही मेरे दिल की भावना है, यही मेरी सेवा है। अन्दर भावना, विश्वास, सच्चाई है तो सारी लाइफ में बाबा ने जो सिखाया है वो जीवन यात्रा में काम आया है। और हमेशा मैं समझती हूँ हम यात्रा पर हैं। सारी लाइफ में कभी किसी के साथ भी ईर्ष्या नहीं की है। आज कोई सेवा करता है तो उसे सेवा का ही नशा होता कि मेरे जैसी सेवा कोई नहीं करता। सूक्ष्म सेवा बरोबर की है, अच्छी तरह से की है परन्तु भावना हो मेरे को बाबा ने जैसे चलाया है वैसे ही चलना है और सबके लिए भावना हो यह भी चले। तो हरेक चेक करे कि जरा भी संस्कारों में किससे भेंट करने की आदत तो नहीं है? अन्दर में कोई भी प्रकार की थोड़ी भी ईर्ष्या तो नहीं है? सारे दिन की दिनचर्या को देख, अपने आपको देख, एक दो को देख, हम सब एक दो के मित्र हैं, पहला तो अपना मित्र आप बनना फिर बाबा को मित्र बनाना। बाबा मिला तो सब मिला। बाबा की मित्रता सिखलाती है, ऐसे सब मिलके चलो-चलाओ। सभी मेरे मित्र हैं, तो जो भी कोई नये भी आये हैं तो उन्हें भी यही सन्देश दो।

किसी की भी कमी हमको पता नहीं है। कोई बतावे भी नहीं, ऐसी दृष्टि वृत्ति स्मृति में रहने से मेरा आजकल का अनुभव है पूज्यनीय बन सकती हूँ ना! कोई भी पुराने वा नये हो वो भी बनें, तो सभी इस भावना से दो शब्द भी बहुत काम करते हैं। समझो किसी के ऊपर कोई ग्रहचारी आई है, तो वो भी योगबल से कैसे हट जाये, वो सेवा अभी करनी है। बाबा ने इतना दिया है कि दे दान तो छूटे ग्रहण। सबसे पहले एक तो स्वयं ही स्वयं को सम्भालें, कोई हमारे से ऐसी गलती न हो जो पुरुषार्थ में ग्रहचारी आ जाये।

प्रश्न:- दादी जी, जो चीज़ हमारे आचरण में नहीं है, अगर हम वो किसी को सुनाते हैं, तो क्या उस बात का प्रभाव किसी पर पड़ता है और कितने प्रतिशत पड़ सकता है? अगर वो बाबा की बात कही हुई है तो? दूसरा कभी-कभी मन में आता है कि यह बात मेरे आचरण में नहीं है, मेरे अन्दर धारणा में नहीं है तो उसका क्या होगा?

उत्तर:- देखो ड्रामा में यह कैसा भी शरीर है फिर भी बाबा ने बिठाया है तो यह शरीर मेरा नहीं है, सिर्फ समर्पण नहीं परन्तु जैसा बाबा वैसे बच्चे। यह है भाग्य, संग भी मिला है, सेवा भी मिली है पर अन्दर जो पुरुषार्थ करना चाहिए वो मीसिंग है। तो पुरुषार्थ में सच्चाई, विश्वास, हिम्मत चाहिए। लक्षण जीवन में तभी आयेंगे जब लक्ष्य सामने हो, यह जो बाबा के शब्द है ना वो प्रैक्टिकल अनुभव हो। लक्ष्य से कभी पाँव खिसके नहीं, यह अन्दर में अपनी सम्भाल करनी है। पाँव खिसक गया माना वेस्ट, संकल्प भी वेस्ट। शब्दों में टाइम गँवाना, यह शोभा नहीं है, सेवा भले अच्छी है परन्तु दिल को खाता है। तो दिखावे वाली सेवा तो नहीं कर रहे हैं! हमारी चन्द्रमणी दादी प्रैक्टिकल में सेवा भी करती थी लेकिन कभी मान शान नहीं मांगा। किसी तरह से भी सभी अपनी सेवा करके भाग्य बनायें। यह सेवा भाग्य से है। पदमापदम भाग्य बनाना है, तो एक बाबा, दूसरा लगाओ बिन्दी।

बाबा का बनने से बहुत सुख मिला है। समय कहता है मुझे सफल करो, समय कहता है मैं तुम्हारे सामने हूँ ना। तो स्वयं, समय, श्वांस, संकल्प में स्मृति भरी हुई हो कि मैं कौन हूँ, किसकी हूँ? बाबा ने क्या सेवायें कराई हैं, सेवा नहीं कराई है पर अपने संग का रंग लगाया है, ऐसे सब कुछ सफल हो। संग का रंग भी चाहिए, जैसा अन्न वैसा मन, जैसा संग वैसा रंग इसका भी मुझे बहुत फायदा मिला है। मैं सेवा के लिए कई देशों में गई हूँ, पर जहाँ भी गई वहाँ भोजन बनाके खाया है। किसी बी. के. के हाथ का बनाया हुआ भी नहीं खाया। तो अन्न, मन, संग ऐसा हो, पुरुषार्थ में सच्चाई हो तो बाबा कहेगा बच्ची की बुद्धि भटकती नहीं है। बुद्धि कहाँ न भटके, न चटके, न अटके।

बुद्धि में इतना ज्ञान हो – मैं आत्मा हूँ, परमात्मा की हूँ, परमात्मा मेरा माता पिता, शिक्षक सखा सतगुरू.. वो मेरा है, यह मुझे प्रैक्टिकल अनुभव है। तो आप सब भी ऐसे प्रैक्टिकल अनुभव करते फिर यह सेवा करो। सेवा जो प्रैक्टिकल करते हैं वो मुझे बहुत प्यारे लगते हैं। अगर पता है कि मैं कुछ भी थोड़ा करूँगा उसमें मेरी कमाई नहीं है, घाटे में चला जायेगा तो वो काम नहीं करो ना, क्योंकि दिल साफ है तो सेवा के साथी भी मिल जाते हैं। सबके सहयोग से सेवा और ही अच्छी तरह से निर्विघ्न वृद्धि को पाती रहती है।

बाबा से लव है तो एम हो कि अब हमें थोड़ा भी घाटे वाला काम नहीं करना है। चाहे कुछ भी हो, कैसी भी सिच्यूवेशन हो पर फिर भी जो राइट थींकिंग है, वही करना है। अपने में ट्रस्ट रखना, यह भी बहुत अच्छा गुण है। ऐसे बनो तो औरों को भी बनने में खींच होगी। इसके लिए संकल्प की क्वालिटी साधारण न हो। साधारण संकल्प कभी भी न हो, भले विकल्प न हो पर संकल्प की क्वालिटी हाई हो, क्योंकि सारी कमाई ही संकल्प पर है। संकल्प, श्वांस, समय तीनों का कनेक्शन है। मेरा श्वांस भी सफल होगा, समय भी सफल होगा कब? जब संकल्प अच्छे होते हैं। समझा।

दूसरा क्लास

''बाबा समान सुखदाई बनने के लिए बीती को बिन्दी लगाओ, कोई भी दिखावे वाला कर्म न हो''

ओम् शान्ति। दिल कहता है दृष्टि से ही मिलते रहें परन्तु कुछ बोले तो अच्छा है ना, इसलिए पहले आप कुछ पूछो फिर मुझे जो सुनाना है वो दिल की बातें सुनायेगी।

प्रश्न:- दादी जी, दिनभर में हम जो कर्म-व्यवहार करते हैं उसका थोड़ा भी प्रभाव न पड़े उसके लिए प्रकाश वा सकाश दीजिए? युक्ति बताइये।

प्रश्न:- साकार बाबा की ऐसी बातें सुनाओ जिससे पुरुषार्थ में और बल मिलें, साकार बाबा का अन्तिम पुरुषार्थ बताइये।

उत्तर:- जैसे आज मैं भण्डारे वालों से मिली। सबको अच्छी तरह प्यार से देखा क्योंकि वह बहुत मेहनत करते हैं, इतने लोग आते जाते हैं, अथक हो करके सेवा करते हैं तो यह अच्छे कर्म करते हैं उन्हें आशीर्वाद स्वत: मिलती रहती है। आशीर्वाद मांगने की जरुरत नहीं है। मैंने कहा इतने सब आते हैं सबको खाना खिलाते हो। जितनी भण्डारे की सेवा है उतनी कहीं भी नहीं है परन्तु सदा ही खाना सबको मिले, अच्छी तरह से मिले, कितने भी आवें उन सबको मिले तो उसको ऑटोमेटिकली आशीर्वाद मिलती ही है। भले बाबा आया सबने बाबा से मिलन मनाया, उसकी खुशी तो बहुत है। पर यह बाबा

के दिन की खीर भी बहुत खुशी देती है। ऐसे है ना। मैंने भी खाई। तो यज्ञ के सेवाधारी जो हैं सच्चे बहुत हैं इसलिए आशीर्वाद मांगने की जरुरत नहीं है। जो भी सच्चे कर्म करें पर जरा भी शो न करें। कर्म का दिखावा न हो। मैं यह करता हूँ ... अगर यह भान रहता है तो उसके कर्म में सच्चाई का बल नहीं दिखाई देगा।

ज्ञानी तू आत्मा वही है, जो आत्म-अभिमानी स्थिति में रहे, वही बाबा को पसंद है, प्रिय है इसलिए सदा ही बाबा के सिवाए और किसी को याद न करे, न उसको कोई याद रहे। न मेरे को कोई देहधारी याद करे न मैं उसको याद करूँ।

यह भगवान का यज्ञ है क्योंकि भगवान ने यज्ञ रचा है, उस यज्ञ में हम रहते हैं, यज्ञ का खाते हैं, यज्ञ की सेवा करते हैं, भाग्य हमारा है। खाना खायें, सेवा न करें या थक जायें या कभी हेराफेरी करें, उसमें भी सूक्ष्म थोड़ी ईर्ष्या हो, यह भी सेवा करते हम भी करते पर इसका नाम ऊंचा, मेरे को तो कुछ समझते ही नहीं हैं... तो ऐसे सूक्ष्म संकल्प अगर क्वालिटी वाले नहीं हैं, तो वो कभी भी आगे नहीं जा सकते हैं इसलिए बाबा कहता है 84 का जो चक्कर है उसका ज्ञान बुद्धि में फिट हो। नेचुरल हो। जरा सा भी तेरा मेरा न हो।

ब्रह्मा बाबा के सिवाए और कुछ मुझे याद नहीं। सच्चे बाबा ने ऐसी सच्चाई सिखाई है तो इस बात में आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार होने कारण मेरी यह जीवन यात्रा सफल हुई है। कल मैं गुल्जार दादी के साथ बैठी थी वो तो शान्ति की देवी है, शक्ति देके दृष्टि दे रही थी। तो ऐसी दादी की ऐसी दृष्टि लेने में भी बहुत फायदा है। मैंने कहा मेरी भी दृष्टि ऐसी हो, मैंने कहा बाबा मेरी दृष्टि भी ऐसी कर दो, जो कोई यहाँ आवे उन्हें ऐसा अनुभव हो। यह भी सेवा है। तो मैं देखती हूँ बाबा की श्रीमत अनुसार चलने में बहुत सुख मिला है। ऐसे सुखदाई बनने के लिए अच्छे कर्म करो। फिर एक बाबा की याद ऐसी हो जो बिन्दी लगा सको, कोई चिंतन नहीं हो तो अष्ट शक्तियाँ साथ देंगी तब तो 108 में आयेंगे। तो यह पुरुषार्थ करके ऐसी ऊंची स्थिति को पाना, यह बड़ा भाग्य है।

बाबा का एक है प्यार, दूसरा है प्रेम, बाबा प्यार ऐसे नहीं करता है। छोटे बेबी है तो प्यार से बच्चे बच्चे कहके समझाता है। तो अगर हम सेवा ऐसी करते हैं तो बाबा समझाता है, कैसे समझाता है, समझाने में कितना ज्ञान का सागर है। ऐसे नहीं मैं रिपीट कर रही हूँ कि बाबा ने यह बोला, उसकी गहराई में जाओ तो पता पड़ेगा सारे चक्कर में बाबा के साथ पार्ट बजाने का भान आता है! मैं अभी पूज्यनीय क्वालिटी बन रही हूँ, अभी पूजा मेरी कोई नहीं करे, मेरी कोई सेवा नहीं करे, परन्तु मेरे को सम्भालते ऐसे हैं जैसे बेबी बच्चे को। तो जो बाबा ने पालना दी है, कभी मनमत परमत के प्रभाव में नहीं आई हूँ। जो श्रीमत है उसमें ही ताकत मिली है। मैं अभी आप लोगों को दिल व जान से भले यह शरीर कैसा भी है परन्तु दिल व जान से कहती हूँ कमाल बाबा की है, बाबा की दृष्टि से कितना सुख मिला है। बाबा का यह भी प्यार है जो दृष्टि से कितनी शक्ति भर देता है। फिर उसका प्रेम समान बना देता है। जैसे 8 में दीदी आ सकती है, प्रकाशमणी दादी आ सकती है, विश्वकिशोर दादा आ सकता है क्योंकि इन्होंने बाबा को एक्यूरेट फॉलो किया है। दादा विश्वकिशोर प्रवृत्ति वाला होते भी एकदम नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप होकर रहा। तो आपस में ऐसी रूहरिहान करो जो सभी ऐसा पुरुषार्थ करके कम से कम वैजयंती माला में तो आ जाओ। अभी मार्जिन है। कैसे आयेंगे? श्रीमत को अच्छी तरह से फॉलो करेंगे और जो बाबा को बात पसन्द नहीं आती है वो कभी नहीं करेंगे। ऐसे वैजयन्ती माला में आ सकते हैं। तो मैंने देखा नॉलेज जो है ना सिर्फ बोलने वाले नहीं हैं, अनुभव है। अभी अन्तिम जन्म में सारी लाइफ ऐसे बाबा को देखा है, कितना साइलेंस में... कनेक्शन शिवबाबा से। ज्ञान सुनाते भी कितना निरहंकारी और कितना निर्विकारी। वन्डरफुल। ऐसी स्थिति अगर बनानी है तो समय बाकी थोड़ा है, दिन-रात ऐसे पुरुषार्थ की लगन हो, जैसे बाबा ने हमको चलाया है, ऐसे हर एक बाबा को सामने रख करके फॉलो करे। फॉलो फादर।

बाबा ने अव्यक्त रूप से गुल्जार दादी के द्वारा कितनी पालना दी है। तो मैं क्या कर रही हूँ? मेरी सेवा क्या है? दृष्टि और वृत्ति का कनेक्शन है स्मृति से, स्मृति जैसी होती है जैसी यादादास्त होती है, फिर ऐसी वृत्ति और दृष्टि होती है। यह शब्द बहुत मीनिंगफुल हैं। ज्ञान में आने के बाद अगर कोई भूल हुई है तो उसको माफ कौन करेगा! बाबा नहीं करेगा। इतना योगबल जमा हो, श्रीमत का बल हो, तो खुद ही खुद को माफ कर सकते हैं। ज्ञान में आने के बाद कोई अलबेलाई, सुस्ती है, कुछ भी है तो फिर उसका फायदा नहीं है इसलिए बाबा कहते हैं बच्चे, तेरा बनने से... मेरे दो प्यारे गीत हैं। एक सखी रे मैंने पायो तीन रत्न, बाबा मुरली, मधुबन... यज्ञ से अति प्यार, भगवान का यज्ञ है, दूसरा बाबा तेरा बनने से सुख मिलता इलाही है। भले गीत बहुत हैं पर यह दो गीत बहुत अच्छे लगते हैं। कोई बीती बात चितवो नहीं, आगे की रखो न आश। अनासक्त वृत्ति रखो तो देखो बाबा क्या कराता है! तो ऐसा कोई निमित्त बच्चा हो जो बाबा उनके द्वारा औरों को अपने तरफ खींचे। ऐसी हमारी स्मृति हो, दृष्टि वृत्ति ऐसी हो। अच्छा।

दादी गुल्जार

''मेरे को तेरे में परिवर्तन कर ट्रस्टी बनो, मर्सीफुल बन दुआयें दो दुआयें लो''

सभी के चेहरे खुश हर्षित रूप में दिखाई दे रहे हैं क्योंकि हमें कौन मिला है अगर उसकी महिमा का एक शब्द भी याद है कि बाबा हमारा क्या है? दुनिया वाले बिचारे गाते रहते हैं, कीर्तन करते हैं, भजन गाते हैं, पुकारते हैं लेकिन हम क्या कहेंगे? हम कहेंगे कि जो पाना था वो पा लिया। पा लिया कि अभी पाना है? पा लिया। तो मेरा बाबा है, मेरे शब्द को अण्डरलाइन करो क्योंकि हमने भी 63 जन्म भक्ति की और पुकारा भी बहुत कि आओ और बाबा ड्रामा अनुसार अब आया है मेरे लिये। बाबा मेरा है, मेरे लिये ही आया है, इसमें बहुत रूहानी नशा चढ़ता है। मेरा शब्द कहने से अपना अधिकार याद आ जाता है। जिस पर जिसका अधिकार होता है, वही कह सकता है यह मेरी है या मेरा है। इसलिये बाबा कहते सिर्फ बाबा शब्द नहीं बोलो। बाबा भगवान है, बाबा बहुत बड़ा है, बाबा परमधाम में रहता है... वो तो ठीक है लेकिन मेरा बाबा है, यह है मुख्य बात। भगवान के ऊपर हम अधिकार रख सकते हैं क्योंकि भगवान ने हमको जन्मसिद्ध अधिकार दिया है। हमने कहा मेरा बाबा और बाबा ने भी कहा कि मेरे बच्चे तो अधिकार हो गया ना, हमारा बाबा पर और बाबा का अधिकार हमारे ऊपर। तो मेरा बाबा यह भी याद रखो तो सारे दिन में जो 63 जन्म से हद के मेरे मेरे का कॉन्सेस रहा है, वो सब खत्म होता जायेगा।

जैसे मेरा शरीर, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरे-मेरे-मेरे... तो यह मेरे मेरे का ही फेरा है लेकिन बाबा भी कितना चतुर है। बाबा कहते हैं तुमको मेरा मेरा कहने की आदत है तो मेरा ही कहो। मेरा बाबा कहेंगे तो इसमें मेरा शब्द तो आ गया। उस मेरे में अनेक मेरे हैं। शरीर मेरा है तो शरीर में कितनी कर्मेन्द्रियां हैं, मेरा हाथ, मेरा पाँव, मेरी आँख, मेरे कान..... देखो कितना मेरा-मेरा है? परिवार में भी कितने मेरे हैं? अगर एक परदादा ग्रेट ग्रेट ग्रैण्ड फादर कोई हो और वो अपना सारा परिवार देखे, कितनी लम्बी लिस्ट होगी। कितना मेरा-मेरा होगा। तो मेरे मेरे ने ही हमको बॉडी-कॉन्सेसनेस में लाया। अब उसी कॉन्सेसनेस को बदलके मेरा-मेरा कहने का बहुत अभ्यास करना है। जैसे पहले मैं आत्मिक स्थिति में स्थित हूँ क्योंकि पहला पाठ हमारा यह है - मैं आत्मा हूँ। अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करना होता है, तो देखो मैं स्वयं को आत्मा समझ बाप को याद कर रहा हूँ? बॉडी-कॉन्सेसनेस के भान में रह सिर्फ बाबा बाबा सोचने कहने से कुछ नहीं होता है क्योंकि यह बाबा तो बॉडी-कॉन्सेसनेस का है ही नहीं। तो अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो, यह लाइन बाबा की अण्डरलाइन करके अच्छी तरह से बहुतकाल तक अभ्यास करो।

बाबा ने हमको जीवनमुक्ति का रास्ता एक शब्द की मात्रा में दे दिया है वो शब्द कौन-सा है, जानते हो? एक शब्द है मेरा, दूसरा शब्द है तेरा। मेरा मेरा खत्म हो गया, तो मेरा हो गया तेरा। तेरा माना ट्रस्टी। मेरा माना गृहस्थी। गृहस्थी मेरा मेरा.. कहेगा, हम कहेंगे बाबा का है...। जैसे हमारी दादी को यह पक्का है कि यह मेरा नहीं है, तेरा है। तेरा है तो तेरा तुझको अर्पण, मेरा कुछ नाही लागे.. अब यह गाते तो हैं, लेकिन अन्दर से सुई को भी अपना समझते हैं क्योंकि मेरे का भान सब याद दिलाता है। अगर सचमुच तेरा तेरा का भान है तो हो गये बेफिक्र बादशाह, ट्रस्टी। गृहस्थी माना मेरा मेरा का बोझ बढ़ता जाता है और तेरा तेरा करो तो सब बाबा पर बोझ चला गया। मैं आत्मा इन कर्मेन्द्रियों का बादशाह हूँ तो जो ऐसे बेफिक्र हैं वही बादशाह बन सकते हैं। अगर कोई भी मेरापन होगा तो बेफिक्र नहीं। तो बहुत सहज है कि यह मेरापन जितना बाबा में लायेंगे, जितना हो सके मेरापन बाबा में लाओ, यह अण्डरलाइन करो। अगर मेरा बाबा कह दिया तो आपका अधिकार रहेगा। बाबा बंधा हुआ है। तो भगवान को भी हम प्यार की रस्सी से बांध सकते हैं।

हर शक्ति पर हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, तो कभी दिलशिकस्त नहीं होना क्योंकि मेरे लिये बाबा आया हुआ है। मेरा पूरा अधिकार बाबा के ऊपर है, तो बाबा मेरा नहीं सुनेगा तो किसका सुनेगा लेकिन विधि पूर्वक हो। आत्मा समझके बाप से बात करो। अधिकार आत्मा को मिलता है, शरीर को

नहीं मिलता है। तो हमारा पहला पाठ है आत्मा का। मैं अपने को आत्मा समझती हूँ तो परमात्मा से कनेक्शन नेचुरल जुट जायेगा। सिवाए बाबा के और कोई याद आयेगा ही नहीं। अभी एक सेकण्ड के लिये शरीर को भूलके अपने को आत्मा समझके देखो। अभी सोचो आत्मा हो गये, शरीर का भान किनारा हो गया। अच्छा, अभी मैं आत्मा हूँ तो आत्मा के लिये क्या है? यह संसार चाहिए आत्मा को? पदार्थ चाहिए? यह बॉडी के सम्बन्ध चाहिए? आत्मा के लिये तो सब सम्बन्ध परमात्मा के साथ हैं। त्वमेव माताश्च... यह एक ही परमात्मा के लिये कहा गया है। तो आत्मा रूप में स्थित हो जाओ तो लगेगा कि हमारा संसार ही एक बाबा है। और कहाँ बुद्धि जायेगी ही नहीं। तो मैं आत्मा हूँ, यह अभ्यास बीच-बीच में करना चाहिए। शरीर के भान में रहने का अभ्यास नेचुरल हो गया है, नेचर हो गया है, ऐसे ही मैं आत्मा हूँ - यह हमारी नेचर नेचुरल हो जाये, सेकेण्ड में याद करे मैं अशरीरी आत्मा हूँ। आत्मा रूप में स्थित हो जाओ तो हो सकते हैं ना? बस, यह प्रैक्टिस सारे दिन में घड़ी-घड़ी हो। तो काम करते भी मैं आत्मा करावनहार हूँ मालिक हूँ, मैं बादशाह हूँ, राजा हूँ स्वराज्य, स्व के ऊपर राज्य। आत्मा इस बॉडी में जो भी कर्मेन्द्रियाँ हैं मन बुद्धि संस्कार हैं, सबके ऊपर राजा है। तो यह कर्मेन्द्रियाँ इसकी मैं मालिक आत्मा हूँ, यह स्मृति पक्की रहनी चाहिए। फिर बाबा की याद कोई मुश्किल नहीं।

समय तो हमारी क्रियेशन है, क्रियेटर तेज है या क्रियेशन तेज है, कौन तेज है? तो बाबा रिजल्ट पूछेंगे इसलिये आप अब ऐसा पुरुषार्थ करो तो बाबा को अच्छी रिजल्ट दे सकेंगे। बाबा भी वरदान देंगे, खुश होंगे। वैसे तो बाबा खुश रहता है लेकिन खुशी में खुशी। और आजकल बाबा ने तो बहुत सहज पुरुषार्थ बता दिया कि दुआयें दो और दुआयें लो। कोई बद्-दुआ देवे तो भी उसको आप दुआ दो। बस। बद्-दुआ माना खराब चीज़, तो बाबा कहते खराब चीज़ क्यों अपने अन्दर मन में डालते? तो जिस समय कोई बद-दुआ देता है तो उस समय कैसे हम बद-दुआ सुनते हुए भी उसको चेन्ज करें? उस समय आप अपने को यह समझो कि मैं मर्सीफुल हूँ। रहमदिल हूँ क्योंकि मैं उस समय यह समझता हूँ तो यह बिचारा परवश है, कोई क्रोध के वश है, कोई ईर्ष्या के, कोई लोभ के, कोई मोह के वश, कोई अभिमान के वश... तो बिचारे परवश के कारण ऐसा करते हैं, तो ऐसे परवश के कारण कभी किसी को क्रोध नहीं आता है और आना भी नहीं चाहिए। जान-बूझके कोई करता है तो वो अलग बात है।

तो बाबा कहते हमको मर्सीफुल स्टेज में रहना चाहिए क्योंकि तुम्हारे जड़ चित्र लास्ट जन्म तक भी मर्सी देते हैं, तब तो मांगते हैं - दया करो, कृपा करो। तो बाबा कहते तुम अभी भी मर्सीफुल, दयालु, कृपालु बनो ना! अच्छा, बिचारा परवश होके किया, गुस्सा करने वाला तो गुस्सा करके शान्त हो गया लेकिन जिसने उसे अन्दर मन में फील किया उसको चैन नहीं आता है, कितना समय उसका यूँ ही वेस्ट में जाता है। इससे नुकसान तो पहले अपने को ही होता है। इसलिये बाबा ने कहा है मर्सीफुल हो करके रहो तो दुआ दे सकेंगे, ले भी सकेंगे, तो आपके पुण्य का खाता जमा हो जायेगा। जिसका यह खाता जितना जमा होगा वो हर जन्म में सदा खुश होगा। और हमें तो बाबा ने 21 जन्म की गैरंटी दी है। तो दुआ दो और दुआ लो - यह विधि बहुत सहज है, बहुत अच्छी विधि है, यह भी करते रहो तो आपके पुण्य का खाता जमा होता रहेगा। जिससे आप सदा सुखी रहेंगे, सब प्राप्ति होंगी। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

''स्वयं को निमित्त समझकर हर कार्य करो तो बेफिकर बादशाह बन जायेंगे''

हम सब हैं बेफ़िक्र बादशाह बाबा के बच्चे–सदा बेगमपुर के बादशाह। हमें न कोई भी फ़िकर होता, न कोई चिन्ता होती, न कोई चिन्तन चलता – इसका कारण है कि हम निमित्त हैं। फ़िकरात करने वाला करे, मैं क्यों करूँ? मुझे आप कहते हो कि यह कार्य करो तो मैं करती हूँ। तू कराने वाला है, हम निमित्त हैं। अच्छा है तो भी आप बैठे हो, गलत हुआ तो भी आप जवाबदार हो। तो फ़िकरात किसकी? कोई बात है प्लान करो, राय करो – कैसे करें, क्या करें लेकिन चिन्ता

किस चीज़ की! चिन्ता चिता के बराबर है। इसलिए संगमयुग की विशेषता है - बेफ़िक्र बादशाह बनो।

आप सभी बापदादा के दिलतख्त पर बैठ जाओ तो किसी चीज़ का फ़िकर नहीं होगा। जो खिलावे, सो खाना है, जो पहनावे सो पहनना है, अगर उसे हमें बेगरी पार्ट में रखना होगा तो भी हम उसमें राज़ी, अगर हमें राजकुमारों की तरह पालेंगे तो भी राज़ी हैं। बाकी किस चीज़ की चिन्ता! बाबा कहता है सर्विस करो, हम कहते हैं करो।

हमारा एक ही मन्त्र है – जी हजूर हम हाज़िर हैं। वह हजूर है, जो हुक्म करे। बाकी चिन्ता क्या करूँ! तो फिर आप लोग क्यों चिन्ता करते? किस बात की फ़िकरात करते? बस यही कहेगा ना सूखा रोटला खाओ तो भी खायेंगे, कहेगा 36 प्रकार का खाना खाओ तो भी खायेंगे। हमारे लिये दोनों बराबर हैं। ऐसे भी कई योगी होते हैं, गुफ़ा में रहते हैं, पानी पर रहते हैं, कोई टाइम आयेगा तो हम भी पानी पर रह लेंगे। कहने का भाव है फ़िकर से फ़ारिग रहो। एकदम सब फ़िकरात त्याग करके जाओ। जो आवे जैसा आवे, जो खिलावे जहाँ जैसे सुलावे, सबमें सन्तुष्टमणी बनो। सन्तुष्टमणी रहो। खुश रहो, खुशी की खुराक खाओ। दिलखुश मिठाई खाओ, बस।

दूसरी फिकरात किस चीज़ की आती? कभी-कभी आपस में संगठन में रहते, थोड़ा बहुत भाव-स्वभाव आता, थोड़ा चिन्तन चलता – इसकी भी विधि सीखो। आप आपस में दो लोग रहते आपकी आपस में नहीं बनती, आप कहते हैं यह बुरा, वह कहता यह बुरा, अच्छा यह भी बुरा, यह भी बुरा। लेकिन कोई तो अच्छाई होगी या नहीं होगी? तो अच्छाई से बात करो ना। तो जब तुम अच्छाई वाले से बात कर लेंगे तो बुराई आपेही खत्म हो जायेगी। बुराई को देखकर बात नहीं करो, उसके बदले अच्छाई देखकर बात करो तो बुराई आपेही खत्म हो जायेगी, जिसको बाबा कहते तुम शुभ-भावना रखो तो शुभ भावना से कामना पूरी होती है। फिर हम किसके लिए लड़ें। मान लो संगठन है, संगठन में आपने कोई बात कही, मैंने नहीं मानी तो आपको बुरा लगा कि यह मेरी बात नहीं मानता, जिसको जिद्द कहते हैं। अच्छा कोई बात नहीं मानता, जिद्द करता आप वह बात छोड़ दो। आपेही ठण्डा हो जायेगा। आपकी भावना है उसको अच्छा बनाने की तो आप दूसरी युक्ति से मनाओ। जो राइट बात है, उसको बताना हमारा कर्तव्य है। आगे वाले का काम है मानना, फिर भी कोई जिद्द करता है तो वह उसका विकर्म बनता, हम उसके विकर्म के साथी नहीं बने। एक विकर्म करे तो मैं दूसरा विकर्म नहीं करूँ। कोई बात भले रांग दूसरे की है मेरी नहीं है, लेकिन मैंने कह दिया अच्छा भैया ओम् शान्ति, सॉरी... तो वह बात खत्म हो गई। जो टेम्परेचर चढ़ा था वह स्वत: ही डाउन हो जायेगा। मैंने सॉरी किया तो इसमें मेरी साड़ी तो मैली नहीं हो गई ना? सॉरी करने से कम से कम दूसरे का दिमाग तो ठण्डा हो गया, ओ. के. जो तुम्हारी इच्छा। जैसे तुम चाहो, बस, खत्म।

श्रीमत के फरमान पर चलना - यह हमारा धर्म है। धर्म कहो, आज्ञा कहो, मर्यादा कहो। तो श्रीमत क्या कहती है–वह सोचो, बस। क्या श्रीमत कहती है कि आपस में लड़ो, मूड ऑफ करो, मनमत पर चलो? श्रीमत ने कहा है क्या कि किसी से लगाव रखो, ऐसा वैसा व्यवहार करो, इस-इस तरह का धन्धा करो? तो बाबा की आज्ञा में सदैव चलो। मैं कदम-कदम श्रीमत पर चल रहा हूँ - इसका चार्ट नोट करो। श्रीमत पर न चलना माना विकर्म करना। श्रीमत के अन्दर सब धारणायें आती हैं। श्रीमत कहती रोज़ मुरली सुनो, सवेरे उठो, ज्ञान-स्नान करो, मर्यादाओं में चलो, पवित्र रहो, ब्राह्मण कुल की लाज़ रखो। यह सब श्रीमत है ना। दूसरों की सर्विस करो, सभी को बाबा परिचय दो, सेवा करो यह सब श्रीमत है। तो बाबा और श्रीमत। अब श्रीमत कहती है कि आप योग की यात्रा का अभ्यास ज्यादा करो। यह है अन्तिम श्रीमत की आज्ञा, इसीलिए अब यह सब जो पुराने संस्कार हैं, उन्हें खत्म करने के लिए बाबा ने श्रीमत दी है एकाग्रता का अभ्यास करो, अशरीरी बनो। यह अभ्यास कमी-कमजोरियों को खत्म करेगा।

हम ब्राह्मण कुल भूषण हैं हमारे मुख से सदैव रत्न निकलने चाहिए। कभी कुवचन नहीं निकले। कईयों के मुख पर गाली झट आ जाती, जो बहुत-बहुत खराब लगता है। दो-चार गालियाँ सेकण्ड में किसको दे देंगे, एक दूसरे का गला पकडकर किसी को चाटा मार देंगे, यह हम ब्राह्मण कर नहीं सकते। क्या जिस टाइम तुमने किसी को चाटा मारा, तुम्हें दर्द नहीं हुआ? क्रोधमुक्त होने का तो सभी पक्का वायदा करके जाओ। दृष्टि-वृत्ति भी सदा पावन रहे–ऐसा पक्का व्रत लो। अच्छा। ओम् शान्ति।